नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

सड़क दुर्घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि चिंता जनक

सड़क दुर्घटनाओं में जिस तरह से वृद्धि हुई है वह बेहद चिंताजनक है. देश में हर दस हजार किलोमीटर पर मरने वालों की दर 250 है, जबकि अमेरिका, चीन और आस्ट्रेलिया में यह संख्या 57, 119 व 11 है. ऐसा लगता है अब भारत की सड़कों पर चलना अब जान हथेली में रखकर चलने जैसा ही होता जा रहा है. ताज़ा जानकारी के अनुसार दिल्ली-चंडीगढ़ हाईवे पर पानीपत के निकट रॉन्ग साइड से आए एक ट्रक ने पांच लोगों की जान ले ली. बताया जाता है कि ड्राइवर नशे में था. रास्ते में जो आया उसे कुचलता चला गया. सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि ऐसी दुर्घटनाओं में निर्दोष लोग ही मारे जाते हैं. वे लोग जो अपने परिवारों के भरण-पोषण के संघर्ष में जुटे रहते हैं. जिनके लिये यह जीवनभर का दुख बन जाता है. वहीं कई घायल जीवनभर के लिये विकलांगता झेलने को अभिशप्त हो जाते हैं. बहरहाल, केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय का एक डराने वाला आंकड़ा पिछले दिनों सामने आया. मंत्रालय के अनुसार पिछले दस सालों में हुए सड़क हादसों में 15 लाख लोग मारे गए. यह आंकड़ा भयावह है. दरअसल, वर्ष 2014 से 2023 के बीच सड़क हादसों में 15.3 लाख लोग मारे गए. बताते हैं कि सड़क हादसों में मरने वाले लोगों में भारत दुनिया में शीर्ष पर है. यह हमारी व्यवस्था की नाकामी को भी उजागर कर रहा है कि क्यों हर साल डेढ़ लाख लोग मारे जा रहे हैं.

सवाल उठाया जा सकता है कि आखिर भारत की सड़कों पर चलना जान हथेली पर लेकर चलने जैसा क्यों होता जा रहा है? आखिर दस साल में केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ जैसे शहर की आबादी से ज्यादा लोग क्यों अकारण मौत के मुंह में चले जाते हैं? आखिर उन लोगों का क्या कसूर था कि उनके हिस्से में ऐसी दर्दनाक मौत आई? आखिर क्यों हम पूरी दुनिया में सड़क हादसों में सबसे ज्यादा मरने वाले देश के रूप में जाने जाते हैं? निश्चित रूप से भारत में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों का यह आंकड़ा एक संवेदनशील व्यक्ति को हिलाकर रख देता है. हालांकि, देश में समय के साथ वाहनों की संख्या और सड़क निर्माण में भी वृद्धि हुई है, लेकिन दुर्घटनाओं का आंकड़ा कम नहीं हो रहा है. वर्ष 2012 में करीब 16 करोड़ गाड़ियां रजिस्टर्ड थी जो पिछले एक दशक में दुगनी हो गई हैं. लेकिन उस अनुपात में सड़कें नहीं बढ़ीं. जहां वर्ष 2012 में देश में भारतीय सड़कों की लंबाई 48.6 लाख किलोमीटर थी, तो वर्ष 2019 में यह 63.3 लाख किलोमीटर तक जा पहुंची थी. यहां यह विचारणीय प्रश्न है कि सड़क सुरक्षा के तमाम उपायों के बावजूद देश में सड़क हादसों में मरने वालों की संख्या कम क्यों नहीं हो रही है. हालांकि परिवहन विशेषज्ञ इसके कई कारण बताते हैं. इसकी वजह तेज रफ्तार में वाहन चलाना, नाबालिगों द्वारा बिना लाइसेंस के वाहन चलाना, निजी वाहन चालकों से ज्यादा ड्यूटी करवाना, कई बार कंस्ट्रक्शन की गड़बड़ी की वजह से भी दुर्घटनाएं होती हैं क्योंकि मोड इत्यादि अव्यावहारिक ढंग से बना दिए जाते हैं. जैसे इंदौर से आगरा मुंबई मार्ग पर गणपति घाट का निर्माण इस तरह किया गया कि वहां दुर्घटनाओं का बड़ा स्पॉट बन गया.

विशेषज्ञों ने निरीक्षण कर बताया कि गणपति घाट का निर्माण गलत डिजाइन से हो गया है. नतीजे में वाहन दुर्घटनाओं की बाढ़ आ गई, जब समस्या बढ़ गई तो डिजाइन में संशोधन किया गया. अब वहां नए सिरे से घाट का निर्माण किया गया है. इसके अलावा आजकल दुर्घटनाओं का एक कारण यह भी है कि डिवाइडर के कारण यू टर्न लेने के लिए काफी चलना पड़ता है. ऐसे में वाहन चालक रॉन्ग साइड गाड़ी चलाकर अपनी साइड में आना चाहते हैं. जाहिर है परिवहन मंत्रालय को सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर जन जागरण अभियान चलाया जाना चाहिए जिससे लोग ट्रैफिक नियमों का पालन करें. कुल मिलाकर सड़क दुर्घटनाओं पर रोक लगना जरूरी है.

'बाटेंगे (नोट) तो जीतेंगे-हारेंगे'

राजनीति में नारों का महत्व

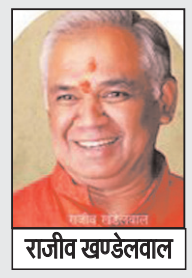
राजीव खण्डेलवाल

इस महीने के प्रारंभ से ही चुनाव प्रचार के अंतिम चरण व मतदान के समय तक उक्त नारे और उससे उत्पन्न जवाबी नारे ही मीडिया व चुनावी परिवेश में छाए रहे. देश की राजनीति खास कर चुनावी राजनीति में नारों का क्या महत्व है, और उनके अर्थ, अनर्थ व द्विअर्थी मतलब (मैसेज) कैसे होते हैं, इसको थोड़ा समझने का प्रयास 'नारों की टाइमिंग' के साथ करते हैं.

'योगीनाथ उवाच'- भगवान कृष्ण जन्माष्टमी के दिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक आक्रमक बयान दिया 'राष्ट्र से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता और राष्ट्र कब सशक्त होगा, जब हम एक रहेंगे, नेक रहेंगे, बटेंगे तो कटेंगे, आप देख रहे हैं ना, बांग्लादेश में देख रहे हो ना, वह गलतियां यहां नहीं होनी चाहिए'. इस कथन में शामिल 'बटेंगे तो कटेंगे' ने एक नारे का रूप लेकर राजनीति की धुरी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आस-पास केंद्रित हो गई, जिसे आगे समझने का प्रयास करते हैं.

नारे की अलग-अलग व्याख्या- उक्त नारे का शाब्दिक अर्थ गलत कहां है? उक्त नारे में योगी आदित्यनाथ ने न तो धर्म का जिक्र किया है और न ही जाति का जिक्र किया है. तब फिर उक्त नारे को धर्म व जाति से जोड़कर 'बयानवीर लोग क्यों अर्नगल बयानबाजी' आरोप-प्रत्यारोप के दौरान कर रहे हैं? इसका मात्र एक कारण शायद यह दिखता है कि चूंकि उक्त प्रारंभिक बयान में योगी द्वारा बांग्लादेश का उल्लेख किया गया है, जहां पर अल्पसंख्यकों (हिन्दुओं) पर प्रधानमंत्री शेख हसीना के सत्ता से हटने के बाद से अत्याचार बढ़े है, शायद उस चिंता के संदर्भ में इस बयान को अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक के बीच एक नैरेटिव बनाने का प्रयास 'वोट' की राजनीति के चलते किया जा रहा है. प्रारंभ में योगी आदित्यनाथ के बयान को एक सिरे से भाजपा के अनेक नेताओं व मीडिया ने भी लपका. लेकिन शैने: शैने: उक्त बयान से कुछ नुकसान, खासकर 'अल्पसंख्यकों' के एकजुट होने के चलते, समय-समय पर उसमें परिवर्तन किया गया. प्रधानमंत्री ने असम के मुख्यमंत्री के बयान को आगे बढ़ाया 'एक रहेंगे तो सेफ रहेगें'. बागेश्वर धाम के पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने योगी आदित्यनाथ का समर्थन करते हुए कहा बटेंगे तो चीन व पाकिस्तान वाले हमें काटेगें. तथापि उन्होंने जात-पात व भेदभाव को समाज के लिए जहर बताते हुए हिन्दू जागरूकता बढ़ाने व 'कट्टर हिन्दु' बनने की अपील की. परन्तु उसी सांस में वे यह भी कहते है कि हमें ब्राह्मण, वैश्य, कास्थ से पहले 'हिन्दुस्तानी' (हिन्दु नहीं) बनना होगा. क्योंकि धर्म के नाम पर बंटवारे को खत्म करना ही रामराज की स्थापना का पहला कदम होगा. तब फिर कट्टर हिन्दु बनाने का आव्हान क्या 'अंर्तविरोध' नहीं है? उक्त बयान के नुकसान की आशंका को देखते हुए एनडीए के समर्थन वाली पार्टीयां नहीं, बल्कि भाजपा के एक-एक करके नेताओं द्वारा बयानों से अपने को अलग-थलग कर रहे हैं, जैसे अजीत पंवार, एकनाथ शिंदे, पंकजा मुंडे, नीतिन गडकरी, राजनाथ सिंह, उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक व केशव प्रयाद मोर्य आदि. वैसे आज कल हमारे देश में कट्टरता के साथ 'कट्टर' शब्द की भी कटरता के साथ शोर 'कट्टर ईमानदारी' 'कट्टर हिन्दु' कट्टर देशभक्त हो रहा है? नारे का अर्थ का अनर्थ कैसे निकाला जाता है, इसका उदाहरण 'एक रहेंगे तो सेफ रहेगें' के संदर्भ में राहुल गांधी के 'तिजोरी' के साथ दो उद्योगपतियों पर किया गया कटाक्ष व व्याख्या से समझा जा सकता है.

नारों की महत्वता, प्रभाव, परिणाम - देश की राजनीति में नारों का बड़ा योगदान रहा है. याद कीजिए! वर्ष 1965 लाल बहादुर शास्त्री ने सैनिको व किसान पर परिवर्तन के लिए दिया अराजनैतिक नारा 'जय जवान जय किसान' वर्ष 1967 के चुनाव में कांग्रेस को फायदा मिला. वर्ष 1971 में इंदिरा गांधी 'गरीबी हटाओं' का नारा देकर सत्ता पर आरूढ़ हो गई थी. गरीबी हटी या नहीं, यह शोध का विषय हो सकता है, परन्तु गरीब वर्ग जरूर संख्या में बढ़ गया व क्रय क्षमता में और कम हो गया. वर्ष 1977 में 'इंदिरा हटाओं देश बचाव' नारा सफल रहा. वर्ष 1984 में 'ना जात पर, न पात पर, मोहर लगेगी हाथ पर' के नारे देकर ऐतेहासिक विजय प्राप्त करने वाली कांग्रेस समय का चक्र ऐसा चला कि वर्तमान नेतृत्व आज जातिवादी गणना को जोर-शोर से चुनावी मुद्दा बना रहा है.

चुनाव आयोग की अक्षमता

एक बात तय है कि देश में चुनाव कराने का महत्वपूर्ण तंत्र 'चुनाव आयोग' अपनी कार्यक्षमता व विश्वसनीयता न केवल खो चुका है, बल्कि निष्पक्षता से भी कोसो दूर है. चुनाव आयोग की निष्पक्षता व कार्यक्षमता के नाम पर आज भी टीएन शेषन को ही याद करते है. अन्यथा जो जप्ति एक पार्टी के विधायक की शिकायत पर हुई, चुनाव आयोग की मशीनरी के सर्विलांस के रहते उक्त पैसा कैसे, कब व कहां से आया चुनावी मशीनरी को मालूम ही नहीं पड़ा. यह एक अक्षमता व शोध का विषय है. इस 'कैश कांड' ने एक बात तो सिद्ध कर दी कि यदि आप जागते रहेंगे तब न तो आपकी जेब कटेगी न ही दूसरों की जेब भरी जा सकेगी.

ब्राजील में जी-20 सम्मेलन

मोदी चाहते हैं ग्लोबल संस्थाओं में सुधार

ब्राजील की पहल 'भूख और गरीबी के विरुद्ध ग्लोबल गठबंधन' का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रिओ में आयोजित दो दिवसीय जी-20 शिखर सम्मेलन में विकासशील संसार के लिए भारत की चिंताओं को व्यक्त किया और कहा कि टकराव व युद्धों के कारण जो संकट उत्पन्न हो रहा है, उससे ग्लोबल साउथ के देशों पर फूड, फ्यूल व फर्टिलाइजर के संदर्भ में गहरा कुप्रभाव पड़ रहा है. इस बात के काले बादल छाये रहे कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने यूक्रेन को अपने हथियारों से रूस में गहराई तक वार करने की अनुमति दे दी है. जी-20 के नेताओं ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया, जिसमें गाजा व यूक्रेन के लोगों को हिंसक टकराव के कारण हो रही तकलीफों को हाईलाइट किया गया और साथ ही क्लाइमेट चेंज, गरीबी उन्मूलन और कर नीति के सिलसिले में आपसी सहयोग पर बल दिया गया. बैठक के एजेंडा से स्पष्ट था कि अमेरिका में ट्रम्प की सत्ता में वापसी से जो ग्लोबल व्यवस्था में परिवर्तन संभावित है, उसको मद्देनजर रखते हुए सहमति बनाने का प्रयास किया गया है.

व्यापार, क्लाइमेट व अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर इन नेताओं ने जो चर्चाएं कीं उससे जाहिर है कि अमेरिकी नीति में जो संभावित बदलाव आ सकता है, उससे बचने के लिए कमर कसी गई है. ट्रम्प ने घोषणा की है कि है कि वाइट हाउस में पहुंचते ही वह टैरिफ से लेकर यूक्रेन युद्ध पर अमेरिका के दृष्टिकोण को बदलेंगे, रिओ सम्मेलन में नेता इस बात पर सहमति बनाने में सफल रहे कि युद्धों के कारण मानव पीड़ा बढ़ती जा रही है और इसके

आर्थिक कुप्रभाव भी पड़ने लगे हैं. नेताओं के संयुक्त वक्तव्य में गाजा की 'अमानवीय स्थिति' पर भी गहरी चिंता व्यक्त की गई और इस बात का आहवान किया गया कि वहां नागरिकों को तुरंत मदद व सुरक्षा उपलब्ध करायी जाये और पूर्ण युद्धविराम कराया जाये.

बिना दांत का शेर बन गई

रिओ सम्मेलन में 'सामाजिक समावेश और भूख व गरीबी के विरुद्ध संघर्ष' विषय पर बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्लोबल संस्थाओं में सुधार लाने की आवश्यकता पर भी ध्यानाकर्षित किया और कहा कि जी-20 इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कार्य करेगा. उन्होंने कहा, जिस तरह से हमने नई दिल्ली सम्मेलन के दौरान हमने अफ्रीकन यूनियन को जी 20 की सदस्यता देकर ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत किया, उसी तरह से हम ग्लोबल प्रशासन की संस्थाओं में सुधार लायेंगे. अधिकतर ग्लोबल संस्थाएं, दरअसल, बिना दांत का शेर बनकर रह गई हैं, जिनसे न कोई डरता है और न कोई उनकी बात सुनता है. इसी वजह से दुनियाभर में संकट बढ़ते जा रहे हैं. इजराइल ने संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के फिलिस्तीन में जाने पर रोक लगा दी और वहां मानवीय मदद भी नहीं पहुंचने दे रहा है. मोदी ने अपने भाषण में इस बात पर भी बल दिया कि जी-20 की वार्ताएं तभी सफल हो सकेंगी जब ग्लोबल साउथ की चुनौतियों व प्राथमिकताओं को ध्यान में रखा जायेगा. ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आज जब संसार फिर से दो खेमों में विभाजित हो गया है, जिसमें एक तरफ अमेरिका व यूरोप के नाटो देश हैं और दूसरी तरफ रूस, चीन व ईरान का त्रिकोण है तो भारत की कोशिश ग्लोबल साउथ को तीसरे तटस्थ खेमे के रूप में खड़ा करने की है. यह एक तरह से गुट-निरपेक्ष आंदोलन 2.0 हो सकता है. इसकी जरूरत से इंकार भी नहीं किया जा सकता. दरअसल, भूख और गरीबी, जिनसे लड़ने पर सम्मेलन में अधिक फोकस किया गया, की समस्या ग्लोबल साउथ के देशों में ही अधिक है, जिसके समाधान के लिए यह भी जरूरी है कि ग्लोबल संस्थाओं के प्रशासनिक तरीकों में सुधार लाया जाये. मोदी ने कहा कि दिल्ली जी-20 सम्मेलन में जो जन-केंद्रित निर्णय लिए गए थे, उन्हें ब्राजील की अध्यक्षता के दौरान आगे लेकर चला गया है और यह अत्यंत संतोषजनक है कि जी-20 ने एसडीजी लक्ष्यों को प्राथमिकता दी है. मोदी ने कहा, व्हमने समावेशी विकास पर फोकस किया, महिलाओं के नेतृत्व में विकास और युवा शक्ति को प्रोत्साहित किया.

- शाहिद ए चौधरी

मणिपुर में बीरेन सिंह को बर्खास्त किया जाए

मणिपुर में स्थिति लगातार बिगड़ती चली गई. राज्य धधक रहा था, हत्याएं व अमानुषिकता से अराजकता व्याप्त थी लेकिन 19 महीनों से केंद्र की मोदी सरकार इसकी अनदेखी करती रही. प्रधानमंत्री को देश-विदेश जाने के लिए समय है लेकिन मणिपुर जाना उन्होंने कभी जरूरी नहीं समझा जबकि वहां बीजेपी नेतृत्व की बीरेन सिंह सरकार है. नेशनल पीपुल्स पार्टी ने बीरेन सिंह सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया है. 60 सदस्यीय विधानसभा में एनपीपी के 37 विधायक हैं. यद्यपि इससे सरकार गिरने का कोई खतरा नहीं है. केंद्र ने लंबे समय तक न तो कोई हस्तक्षेप किया, न शांति स्थापना का कोई प्रयास किया. मेघालय के मुख्यमंत्री व एनपीपी प्रमुख कोनराड संगमा ने कहा कि यदि सही

समय पर निर्णय न लिए जाएं तो हालात बेकाबू और बेहद खराब हो जाते हैं. निर्दोष लोग मर रहे हैं, जिसे देखकर वेदना होती है. केंद्र चाहता तो मुख्यमंत्री बीरेन सिंह को हटाकर कुछ सार्थक कदम उठा सकता था. इस मुद्दे पर केंद्र सरकार और बीजेपी टस से मस नहीं हुई. उन्होंने अपने सहयोगी दल एनपीपी की सलाह भी नहीं सुनी. जनता का सरकार और सिस्टम दोनों से भरोसा हट गया है. मणिपुर में 11 दिनों से जातीय हिंसा जारी है लेकिन बीरेन सिंह सरकार निष्क्रय बनी बैठी है. इंटरनेट फिर से बंद कर दिया गया है. सेना और पुलिस के बीच कोई सहयोग नहीं है. देशज (भीतरी) और बाहरी का विवाद लगातार जारी है. केंद्र और बीरेन सिंह इसे कानून-व्यवस्था की समस्या मानकर चलते हैं. जुलाई में प्रधानमंत्री मोदी ने राज्यसभा में अपने भाषण में कहा था कि राजनीति से परे जाकर राज्य में शांति और स्थायित्व लाया जाए. शांति के पक्ष में जनमत तैयार करना होगा. पीएम के यह शब्द साकार रूप नहीं ले पाए. इसे ईमानदारी से लागू करना होगा. मंत्रियों के कभी-कभार दौरे से काम नहीं बनेगा. केंद्र ने बीरेन सिंह को उनकी विफलता के बावजूद संरक्षण दे रखा है. उसे जनता की आवाज सुननी होगी जिसने हिंसा और आगजनी में बहुत कुछ खोया है. बीजेपी को उसके सहयोगी दल बताएंगे कि विफलता के लिए जिम्मेदार कौन है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मोहब्बत की दुकान में जहरीला सामान राहुल के बारे में बीजेपी का ज्ञान

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, बीजेपी का आरोप है कि राहुल गांधी की मोहब्बत की दुकान में जहरीला सामान है. इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

हमने कहा, जब बीजेपी नेता उस दुकान में गए ही नहीं तो उन्हें कैसे मालूम कि सामान जहरीला, मिलावटी, पुराना या घटिया है? बिना आधार ऐसी कमेंट करना ठीक नहीं है. वे चाहें तो दुकान के सामान की क्वालिटी की जांच फूड एंड ड्रग कंट्रोल विभाग से करवा लें या शाप इंस्पेक्टर को भेजकर पता लगा लें कि दुकान का लाइसेंस रजिस्ट्रेशन और दस्तावेज ठीक-ठाक हैं या नहीं. यह भी देख लें कि दुकान किसी एक जगह स्थित है या चलती फिरती शॉप-ऑन व्हील है! कितने बजे खुलती है और कितने बजे बंद होती है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, मोहब्बत की दुकान कोई ग्रॉसरी स्टोर या डेलीनीड शॉप नहीं है. यह दुकान राहुल के दिल की गहराइयों में है. दिलदार ही मोहब्बत की समझ रखते हैं और उसका खुलकर इजहार करते हैं. मोहब्बत एक भावनात्मक कमॉडिटी है. मोहब्बत की नहीं जाती बल्कि हो

जाती है. मोहब्बत की कोई उम्र नहीं होती. आपने पुराना गीत सुना होगा- बचपन की मोहब्बत को दिल से ना जुदा करना, जब याद मेरी आए मिलने की दुआ करना ! फिल्म मुगल-ए-आजम का गीत था- मोहब्बत जिंदा रहती है, कभी वो मर नहीं सकती ये चीज है जो खुदा से डर नहीं सकती ! उसी फिल्म में अनारकली का रोल निभानेवाली मधुबाला गाती है- मोहब्बत की झूठी कहानी पे रोए, बड़ी चोट खाई, जवानी पे रोए ! शम्मी कपूर को भी एक फिल्म में गाते दिखाया गया था- मेरी मोहब्बत जवां रहेगी, सदा रही है सदा रहेगी !

हमने कहा, राजनीति में कैसी मोहब्बत और कहां की मोहब्बत ! मोहब्बत करनेवाले मजनूं, फरहाद, रांझा, रोमियो प्रेम कथाओं के पन्नों तक सीमित रहे. उनमें से कोई राजनीति में नहीं आया. राजनीति में बेवफाई और दगाबाजी चलती है. मोहब्बत वैसे भी खतरनाक चीज है. आपने सुना होगा- मोहब्बत इम्तेहान लेती है, आशिकों की जान लेती है. किसी मोहब्बत करनेवाले से पूछो तो वह बताएगा कि ये इश्क नहीं आसां बस इतना समझ लीजे, इक आग का दरिया है और डूब कर जाना है. मोहब्बत करनेवाले का दिल टूटता है तो वह गाता है- तुम अगर मुझको ना चाहो तो कोई बात नहीं, मेरी बात और है, मैंने तो मोहब्बत की है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11730

-डॉ. सागर खादीवाला

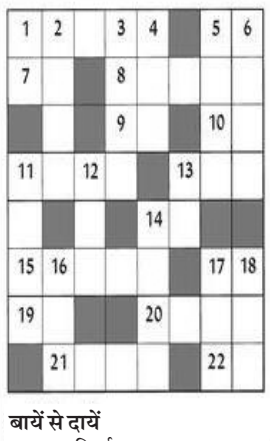

ऊपर से नीचे

1. स्थिति, अवस्था, हालत 2. जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो 3. विजयादशमी 4. हिलोर, तरंग 5. नया-नया आया हुआ (सं.) 6. स्पष्टवादी, किसी तरह का संकोच न करनेवाला, उग्र 11. दायें तथा बायें दोनों हाथों से सुगमतापूर्वक तीर चला सकने के कारण ही अर्जुन का यह नाम पड़ा. 12. वर्षा के चार महीने, चातुर्मास, वर्षा ऋतु संबंधी गीत या कविता. 13. भूलने का भाव, गलती, चूक 14. मन संबंधी, मन की कल्पना से उत्पन्न 16. पान में खाने का तम्बाखू, सुरती, चावल से बना मीठा भोज्य पदार्थ. 17. सम्मान, प्रतिष्ठा 18. हिंदुस्तान

बायें से दायें

1. दल परिवर्तन करना 5. नाखून 7. डाली, पौधे की कलम, टहनी (उर्दू) 8. कुशल घुड़सवार 9. प्रत्येक, एक-एक, छीनने या हरण करनेवाला, शिव 10. बीता हुआ, दशा, अवस्था 11. किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर स्मारक स्वरूप बनाया गया छोटे चबूतरा या वेदी. 13. पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग, धरातल 14. सामग्री, सामान, धन, संपत्ति, कोई उत्तम वस्तु, माला 15. उपकरण, सामग्री 17. चमक, कांति, दीप्ति 19. वत्र, चीरने का काम या भाव 20. एक प्रख्यात विजेता जो मकदूनिया नरेश का पुत्र था. 21. दर्शनशास्त्र का ज्ञाता 22. न, नहीं, सम्मति, राय, वोट

Solution 11729

स	म		आ	स	रा		प
ह	त्था		या	द		आ	रा
च		आ		न	व	यु	ग
र	क्षा	त्म	क		र	क्त	
	ल	जा	ना		मा		अ
मी	न		ग	म	ला		र
ना		अं	त	र		त	मा
र	ज	त		ना	श	वा	न

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा से कष्ट, व्यर्थ वाद विवाद होगा. भोग विलास में धन व्यय होगा. मतभेद में वृद्धि होगी. धन संकट का सामना करना पड़ेगा. वर्ष के मध्य में स्थाई लाभ का योग है. पारिवारिक चिन्तायें कम होंगी. कार्य में थकान महसूस होगी. सफलता के योग है. वर्ष के अन्त में व्यापार व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी. व्यवसाय में वृद्धि होगी. शत्रु पक्ष परास्त होगा. आर्थिक दशा में सुधार होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंकी आर्थिक दशा में सुधार होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी. अत्याधिक परिश्रम से कार्य में सफलता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियोंको परिश्रम व व्यस्तता रहेगी. आत्म विश्वास में वृद्धि होगी. सिंह राशि केव्यक्तियों को मनोरंजक स्थल की सैर होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष पर संकट का सामना करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को यात्रा में कष्ट होगा, विवाद से बचना चाहिये. भोग विलास में धन व्यय होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यापार से लाभ प्राप्त होगा.

मेष- नये कार्य के लिये जरूरी धन की व्यवस्था कर लेंगे, मानसिक प्रसन्नता होगी, व्यापार में सफलता प्राप्त होगी, परेशानियों का निवारण होगा.

वृषभ- घरेलू आयोजन में भाग लेंगे, मातृपक्ष से विशिष्टजनों का समाचार मिलेगा, मतभेदों से बचने का प्रयास करें, मार्गदर्शन मिलेगा.

मिथुन- मित्रों से किया गया वायदा निभाने में मुश्किल होगी, व्यापार में सफलता मिलेगी, महत्वपूर्ण समाचारों की योजना बनेगी, जरूरी विचार विमर्श होगा.

कर्क- रूखे व्यवहार से परिचितों को नाराज कर सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मान सम्मान की प्राप्ति होगी. नवीन योजना बनेगी.

सिंह- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, दिखावे के कारण कर्ज हो सकता है, इष्ट मित्रों एवं परिजनों के सहयोग से कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी.

कन्या- विपरीत माहौल में खुद के लिये अनुकला बना लेंगे, संतान संबंधी कार्यों में व्यस्तता रहेगी, नवीन कार्यों के प्रति मन का झुकाव रहेगा.

तुला- प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझने की उम्मीद है, अधिनस्थ लोगों का सहयोग मिलेगा, बेरोजगारों को प्रयास करने पर रोजगार मिलेगा.

वृश्चिक- कारोबारी विस्तार की संभावना, आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी, कुटुम्बियों का सहयोग प्राप्त होगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

धनु- सामाजिक कार्यों में शामिल होकर मन को खुशी मिलेगी, भावनात्मक संबंध बढ़ेंगे, अधिक वाकपटुता से काम बिगड़ सकता है, वार्तालाप संयमित रखें.

मकर- कार्यक्षेत्र में सहयोग लाभदायी रहेगा, यात्रा मे उठाईगीरों से सावधान रहें, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त हो सकता है.

कुम्भ- अधिकारियों का मेलजोल लाभदायक रहेगा, इच्छित कार्यों की रूपरेखा बनेगी, सफलता प्राप्त होगी, मन में हर्ष और उत्साह बना रहेगा.

मीन- मन की बात मित्रों से कह दें, तनाव कम होगा, पारिवारिक यात्रा हो सकती है, यश मिलेगा. नौकरी में व्यस्तता रहेगी, तनाव की स्थिति से बचें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, गौरवर्ण का लंबे कद का दुबला पतला एवं बुद्धिमान और जिद्दी-मनमौजी होगा, किसी की नहीं सुनेगा, मित्रों की संख्या अधिक होगी, इंजीनियरिंग में तरक्की करेगा, माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

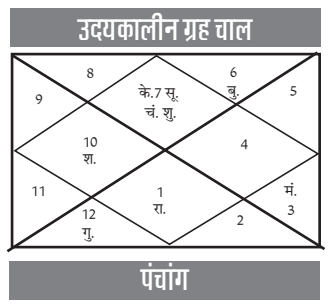

पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2081 मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठी गुरूवासरे रात 8/45, पुष्य नक्षत्रे रात 7/49, शुक्ल योगे दिन 4/43, गर करणे सू.उ. 6/39 सू.अ. 5/21, चन्द्रचार कर्क, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठी को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से गुड़-खांड, शक्कर, नारियल, छुहारा, बादाम, मीन के भाव में तेजी होगी, अलसी, अरंडी, सींगदाना, में नरमी रहेगी, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन, में समता रहेगी, भाग्यांक 3787 है.

SUDOKU 6862

	8			6				
					5			
		9				7		3
	1			8				2
			7		4			
6				3			8	
5		7				4		
			8					
				1			6	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 6861

9	4	5	3	1	8	7	6	2
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7